वैवाहिक संस्कारों में उत्तराखण्डी लोकगीतों की महत्वतता

डॉ0 रंजना रावत

एसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज
देहरादून

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विध्नं कुरूमें देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

भौगोलिक परिस्थितियां, सामाजिक परम्पराएँ और समाज विशेष का आर्थिक गठन सब मिलकर प्रत्येक अंचल के जनजीवन को विशिष्टता प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से वे सभी भौगोलिक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियां, जो किसी अंचल में विद्यमान रही हैं, लोक साहित्य या लोक कथाओं में प्रतिबिम्बित होती है। हमारे देश में ऋग्वेद लोक साहित्य की परम्परा का सबसे प्राचीन और सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।[1], जो पुराण और महाभारत काल तक आते–आते लुप्त सा हो गया तथापि वह परम्परा मौखिक रूप में लोक जीवन में निरन्तर रूप में प्रवाहित होती रही। पुरातत्व और नृविज्ञान की ओर रूझान होने के कारण संग्रहकर्ताओं ने लोक गाथाओं के संकलन पर विशेष बल दिया। उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में सर्वप्रथम 1892 में पं0 गंगादत्त उप्रेती की पुस्तक 'प्रावर्बज एण्ड फोकलोर ऑफ कुमाऊँ एण्ड गढ़वाल' का प्रकाशन हुआ। तत्पश्चात् डॉ0 गोविन्द चातक ने गढ़वाली लोक साहित्य पर, डॉ0 कृष्णा नंद जोशी आदि लोगों ने कुमाऊँनी पर कार्य करने का गौरव प्राप्त किया।[2] सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि की व्यापक अभिव्यक्ति उत्तराखण्ड के लोक साहित्य को देश के अन्य लोक साहित्यों से विशिष्टता प्रदान करती है। डॉ0 सत्येन्द्र 'लोके वेदे' सूत्र (भारतीय जीवन में वेद के समान महत्वपूर्ण) को सर्वोपरि बताते हैं। ये गाथाएँ आदिय परम्पराओ के रूप में ही सही, वैदिक मंत्रों में सन्निहित अर्थों का मान बनाये हुए हैं।[3]

हिन्दुओं में प्रचलित सभी संस्कारो में 'विवाह' सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है। इस संस्कार के सम्पादन से ही व्यक्ति ग्रहस्थ आश्रम में प्रवेश कर सकता है। भारतीय संस्कृति में भी तीन ऋणों में से पितृऋण को संतोत्पत्ति के द्वारा ही चुकाया जा सकता है जो इस संस्कार का प्रमुख उद्देश्य है।[4] उत्तराखण्ड में भी सम्पूर्ण भारतवर्ष की भांति विवाह सबसे उल्लासमय संस्कार है। अतः यहाँ के लोकगीतों में सर्वाधिक संख्या वैवाहिक लोकगीतों की है।[3A] प्रायः विवाह के सभी गीतों में यत्रतत्र श्रृंगार, करूणा, ह्रास–परिह्रास, अतिथि सत्कार, जिज्ञासा, कन्यादान, सप्तपदी, मांगल आदि का पुट मिलता है। विवाह अवसर पर गाये जाने वाले गीतों को 'मांगल' कहते हैं। सामान्यतः गीत वेदी चीनते, चौक पूजते, मंगल स्नान करते, पाहुनों को जिमाते, भांवरे (सप्तपदी) व विदाई के अवसर पर गाये जाते हैं। देवताओं का सर्वाधिक महत्व स्वीकारते हुए कूर्म देवता, धरती, भूम्याल, सूर्य, अग्नि आदि देवों का गीतों से आहवान किया जाता है।

प्राचीन काल में पहाड़ में भी अल्पायु कन्या का विवाह होता था[5] किन्तु परम्परागत रूप से अविवाहित पुत्र 'नौनी' कही जाती है। सर्वप्रथम विवाह का शुभ दिन निश्चित किया

जाता है। ज्योतिष के अनुसार जन्म कुण्डली मिलाकर विवाह निश्चित किये जाते है।[6] दोनों पक्षों द्वारा मंगनी (Betrothal) कार्यक्रम का सम्पादन किया जाता है और उपहारों का आदान–प्रदान किया जाता है।[7] विवाह के चार–पाँच दिन पूर्व वरपक्ष कन्यापक्ष के यहाँ वस्त्र, आभूषण लेकर आते हैं। यह क्रिया 'शाह पट्टा' कहलाती है।[8] इस दिन ब्राह्मण एक कागज पर विवाह का सम्पूर्ण कार्यक्रम लिखित रूप में प्रस्तुत करता है। सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा गणेश पूजन करके हाथ व मूसलों पर 'नाला' (लाल धागा) बांधा जाता है।[9] विवाह जैसे मांगलिक अनुष्ठानों में हल्दी को शुभमंगल सूचक माना जाता है। वैवाहिक लोकगीतों का आरम्भ हल्दी की बाड़ियों का न्योतन से होता है।

विवाह के दिन प्रातःकाल गणेश, पंचाग, दीपक, कुल, कुलदेव का पूजन होता है। मंगलाचरण द्वारा कूर्मदेवता, धरती, भूम्याल, सूर्य, अग्नि आदि देवों का आहवान किया जाता है –

'तुमरी थाती मां यो कारज वीर्यो कारिज सुफल फल्यान।'[10]

उत्तराखण्ड में लोकगीतों द्वारा मंगल्यारी नारियां सर्वप्रथम औजी, ब्रहमा, मंगल्यारियों, हल्दी के खेत को निमन्त्रण देती है –

न्यूति पाले न्यूति पाले मैन औजी को बेटा,
आज भलो चयेन्द बढ़ई को कारज।[11]
पैले न्यूते पैले न्यूते, बैरमुखी वरमा,
आज चैन्द वरमा जी को काज।[11A]

लोकगीतों द्वारा महिलायें सगुनी कागा को हरे वृक्ष पर बैठने का आग्रह करती है –

सगुनी कागा चौ दिशा सगुन, बोल कागा चौ दिशा सगुन।
बैठ कागा हरिया बिरछ, बोला बोला सगुन बोला।[12]

मंगल्यारी नारियां सुहागिन स्त्रियों को आमन्त्रित करने हेतु भी गीत गाती हैं–

सुवा व सुवा पिंजरी वा सुवा, लाल डडी सुवा देव सुवा स्वागिव्यां न्यूतो।
जणद्र नि छौ मैं पछणदो नि छी मैं, के घर के देवा न्यूत।
आग अगवाड़ी पीछे पिछवाड़ी, जै घर होली जगदी जोत,
जै घर होली सि दी बुदि न्यूतू, सुवा रे सुवा वनखंडी सुवा,
ह रिया तेरी गात पिंगला तेरोठू, लला तेरी आंखी नजर तेरी बांकी,
दे सुवा नगरी न्यूत।[13]

लोकगीतों में चौक पूरने की क्रिया का भी सुन्दर वर्णन किया गया है –

चौनन्दी पार सुनेरी खेती, तोऊ खेत बूर्तान जौऊ।
चौक पुरीक कु देवी बैठली, तख मां बैठली लक्ष्मी देवी।[14]

चौक पूरने के बाद सुहागन स्त्रियां कन्या को बान (वाद) देकर स्नान कराती हैं। इस समय मां के हृदय का उल्लास का लोकगीतों में बखूबी वर्णित है –

कैन होय कुण्डी कौज्याल, कौन होय सुरीज धुमैलो।
नहेण लागी सीता जी की लाड़ी, तब होये तब होये धौली धुमेली।।[15]

नववस्त्रों से सुसज्जित कन्या को देखकर स्त्रियाँ गीत गाती है –

'पैरू, पैरू लाड़ी मेरी पंचनाम कपड़ी।'
'डर पुरया हेगी लाडी, बैठु लाडी मांजी की गोद।'[16]

कन्या को आभूषणों से सुसज्जित करते समय भी मंगल्यारी गीत गाती हैं –

सुहाग सुहाग कहाँ से आइयो, सुहाग सुहाग पूरब दिशा से आइयो।

सुहाग सुहाग गले, हाथ कानो में सुहाइयो।(17)

सप्तपदी हेतु 'वेदी' तैयार होने पर कन्या के हृदय में जिज्ञासा का भाव जागृत होता है। आनुष्ठानिक पूजा के समय कन्या के हृदय भाव अभिव्यक्त करते हुए गीत –

करा करा बाबाजी अस्तम पूजा, करा करा बाबाजी ढ़ायो ढ़ायो पूजा।
ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथरवेद आसीस देला, वेद मुखी बरमी वेद पढ़लो।(18)

कन्या को विवाह के दिन भी आतिथ्य सत्कार की चिंता है। लोक के क्षण–क्षण की अभिव्यक्ति लोक गीतों में हुई है। पाहुन सत्कार की चिन्ता का वर्णन –

क्या छयां बाबाजी निंदा सुनिन्दा, भैर ऐ गैन परदीशी लोग।
क्या छयां बाबाजी निंदा सुनिन्दा, भैर ऐ गैन विदेशी लोग।(19)

लोकगीतों में वरवधू को शिव–पार्वती अथवा ब्रहमा–सरस्वती की भांति देखा है –

रथ चढ़ी को देव मैन? वरमा जी मैन सावित्री विवौण।
रथ चढ़ी को देव यैन, विष्णु जली यैन लक्ष्मी बिवौण।
रथ चढ़ी को देव यैन, यादेव यैन पार्वती विवौण।(20)

बारात आगमन पर एक ओर लोक हृदय बारात का स्वागत करने को उत्सुक हैं, वहीं कहीं कोई कमी न रह जाये इसकी चिंता भी है –

कती लाख हस्ती यैन कती लाख घोड़ा, राजा का पैखु कु लेखू नही जाखु।
सभा मा बैठलु धिया कु टुलैया, कोठड़ी बैठलु मुगल समधी।(21)

बारात आने पर लोक की समीति मर्यादा के अर्न्तगत रहने वाली मंगल्यारी हास–परिहास पर आ जाती है। वे वरपक्ष को मधुरतापूर्ण हास–परिहास करती हैं –

यखुली क्यों कु आयो बन्ना अपनी माते क्यों नि लायो।
लौण को त लै गै छौ अपनी मां तै पर चोरून लूटे।(22)
बन्ना की मां जी गै थी बाजार, खे गई लड्डू बुले गई यार।
अरे बन्ना तू मूर्ख गंवार, तेरी मां के सो–सठ यार।

लोकगीतों में वर के पिता का परिहास इस प्रकार वर्णित है –

छाजूं में वेहठी समदिणि पूछै, को होली दूल्हा को बाप ए।
कालो छ जोतो पीहली टांकी, वी होलो दूल्हा को बाप ए।(23)

वर के साथ भी ह्रास–परिह्रास लोकगीतों में बखूबी किया गया है –

वर छ दूलो बेटी घर छनानो वी होलो लाड़ी को कांत ए।
ढेकी भर–भर छांछ उ पेलो रात ज्योडी बांटलो,
दिन भैंसी चरालो खालो बेटी सोल रोटी ए(24)**।।**

लोकगीतों में कन्या के पिता की वर के प्रति जिज्ञासा का भी वर्णन मिलता है –

जैको होलो जैको होलो झिल–मिल जामों,
उई होलो घिया का दुलया, सीस की सोभा
वई देण मधुबन कटोरी, वई देण शंख की पूजा।(25)

मंगल्यारियों के मन में भी वर को लेकर जिज्ञासा का वर्णन इस लोक गीत में है –

छांटा होवा छांटा होवा जनती का लोग
कनु होलो, को होलो द्यो को जवाई।

मंगल्यारियों के हृदय में वर पक्ष द्वारा लाई गई 'बरडल्ली' (सामग्री) के प्रति जिज्ञासा का भी वर्णन मिलता है –

वर आया वर आया हमको क्या लाया
डली भरके मेवे लाया, वर आया वर आया।(27)

एक लोकगीत में वर द्वारा कन्या को देखने की जिज्ञासा व्यक्त की गई है क्योंकि दोनों के मध्य एक परदा डाल दिया गया है –

खोल देवा खोल देवा धौड़ि पगड़ा, देखूँ मैं कन्या का रूप(28)

एक लोकगीत में मंगल्यारियों द्वारा कन्या को न दिखाने का भाव वर्णित हैं –

लुक मेरी धिया लुक भितली भड़ेया, भेरी भड़ेया चोरड़ा बैठयां है।
करनु कैकी लुकलू कसु कैकी लुकलू भितली मडंया भीर भदैया चोरड़ा बैठया है।(29)

कन्यादान उत्तराखण्ड में अत्यधिक पवित्र एवं महत्वपूर्ण कर्तव्य माना गया है। लोकगीतों में इसकी महत्ता का प्रतिपादन किया गया है –

जिमिदान, भूमिदान, सब क्वीदेला, कन्यादान बाबाजी देला।(30) **दी देवा बाबजी का दान, दानू मा दान होलो कन्या को दान।**(30A) विवाह की सार्थकता मातृत्व में मानी गई है। इसलिए विवाह के अवसर पर ही सौभाग्यवती स्त्रियाँ कन्या की गोद भरती हैं। इसे 'छोल्का' बाँटना करते हैं जिसमें श्रीफल, चावल, सुपारी, फूल आदि कन्या के आँचल में डाले जाते हैं।

स्वांगवन्ती, पुत्रवन्ती, औधोदेवी छोलका बाँट दे धौ।
धक, दलिया, छोलंग बिजोरी, औधो देवी छोलका बाँट दे घौ।
निम्बु, नंरगी, छोलंग, बिजोरी, औधो देवी छोलका बाँट दे धौ।(31)

सप्तपदी के सभी अनुष्ठानों का लोकगीतों में अति सुन्दर तरीके से वर्णन किया गया है। इस समय माहौल अत्यधिक भावपूर्ण होता है तब यह लोकगीत गूंज उठता है –

पहिलो फेरो फेरे लाड़ी, कन्या च कुमारी,
दूजों फेरो फेरे लाड़ी, कन्या च मां की दुलारी।(32A)
अरे अरे पंडित लोगों मेरी धिया कनक न दुख न दिया।
दस म्हैण पेट में बोकि, दस धारि मैले दूध पिवाछय।(33)

विवाह संस्कार सम्पन्न करते–2 जब विदाई की बेला आती है तब मंगल्यारियों का करूण हृदय द्रवित हो उठता है, उनके हृदय की पीड़ा इस गीत में झलकती है –

मैत्यों का घोर तुसारू सि फूल्यों, सैसुरियों का घोर तोमड़ी सि फूल।

बारात आगमन पर 'क्या छयां बाबा जी निन्दा सुनिन्दा' कहने वाली कन्या में अकेले श्वसुर घर जाने का साहस न होने की दशा यह गीत दर्शाता है –

चौनन्दी पार में मखुली नि जांदू, तरवाकि बाबा जी बोली नि बिगेन्दी।
त्वे पगड़ी भंजलू स्यूं तालू भण्डार, त्वे मेरी लाडली दूखुली न भंजू।(34)

अन्त में भाई के साथ आने और पिता के आश्वासन पर कन्या पति का अनुकरण करते हुए चल देती है। इस दृश्य को कागा (वर) और कोयल (वधू) के रूप में व्यक्त किया गया है –

कागा कोमल लागा सनेहू, चल न कोयल हमारा देसू।
तुमारा देस के केकू खांणू, तुमारा देश के केके लाणू।

कागा

कोयल.....

हमारा देस च दुधभात खांणू, हमरा देश च निलपट लाणों।
कागा कोयल लागा सनेहू, चल न कोयल हमारा देसू।(35)

अधिकाशतः वैवाहिक कार्यक्रम कन्या पक्ष के यहाँ सम्पादित होने के कारण वधूपक्ष के गीतों की अधिकता है परन्तु वर पक्षीय कार्यक्रमों की जानकारी भी लोकगीतों के माध्यम से होती है।

वरपक्ष के यहाँ चौक पूरने के समय का गीत –

चौनन्दी पार सुनेरी च खेती, तेऊ खेती बूतीन जौऊ।
चौक पूरी विष्णु जी बैठलो, चौक पूरीक रामचन्द्र जी बैठला।(36)

इस चौक पूरे स्थान पर पीढ़ा लगाकर वर को बान दिये जाने का वर्णन –

'जिया रैन जिया रैन मांजी सुहागण जैन तैल फुलैल चढ़ायो।'

उबटन लगाकर नहलाने के बाद नवीन वस्त्र धारण किये हुए वर को देखकर मंगल्यारियों के हृदय में वात्सल्य जाग उठता है–

नहे धुमे लाडा हुरफरया ह्वेगी। बैठ लाडा मांजी की गोद।
बैठै लाडा बाबाजी की गोद, जिमु रई लाडा लाख बरीस।(37)

बारात प्रस्थान के समय एक तरफ मां आनन्द की अनुभूति कर रही है वहीं दूसरी तरफ पुत्र के पराये हो जाने के संदेह से चिंतित हैं–

मां – ह्वेगे लाडो परदीया लोभ, दे दे लाडा ससराधारी मोल।
पुत्र – गया मैं जौलू कासी मैं जौलू, ससराधारी मोल नि दे सकर।(38)

एक लोकगीत में पुत्र द्वारा गुणवान वधू लाने की भावना को अभिव्यक्त किया गया है –

मैं त जांदू पारवती लेंण, तुमुक लोंण छुन्यारी पुन्यारी।
अफ् कू लौंण परदों की राणी।(39)

नवआगन्तुका वधू के प्रति वर की माता के हृदय की जिज्ञासा को सुन्दर अभिव्यक्ति निम्न है –

पैलि मिलली पैली मिलली दूबला की बाड़ी, तै बाड़ी सिर लाडा लाई (नवाई)
तब मिलती तब मिलली पिठई की बाड़ी, तैं पिठई न लाडा माथू छाई देई।(40)

वर गृह में वधू का प्रवेश मांगलिक माना जाता है। लोकगीतों में वधू को 'गृहलक्ष्मी' के रूप में माना है। मंगल्यारियां वधू आगमन पर हर पक्ष की मंगल कामना करती है –

शुभ दिन शुभ घड़ी आयी सुहागण, हम घर हम घर आई सुहागण,
अमरित सिंचदी आई सुहागण, शुभ दिन शुभ घड़ी आयी सुहागण।(41)

उपरोक्त वर्णित लोकगीतों के माधयम से इस शोधपत्र में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि हमारे जीवन का प्रत्येक पल सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है। हमेशा सुखी, समृद्ध और मर्यादित रहने हेतु प्रत्येक सांस्कारिक गतिविधियों का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। यह कहना समीचीन होगा कि लोक द्वारा निर्मित संस्कृति ही लोक की सर्वश्रेष्ठ काव्यकृति होती है। इसीलिए लोकगीतों, पंवाड़ो, देवजागरों, भेड़ों की वार्ताओं, मांगलो आदि का काव्यात्मक मूल्यांकन करते हुए यह तथ्य नहीं भुलाया जाना चाहिए कि लोक कथाएँ या साहित्य का वास्तविक तत्व लोक संस्कृति में निहित है। इस प्रकार का अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि लोक कथाएँ या साहित्य केवल साहित्य नहीं है बल्कि धर्म, इतिहास, समाजशास्त्र, पुराण, आख्यान आदि सभी कुछ है और सही अर्थों में लोक संस्कृति का वाहक तत्व है। लोक कथाओं में अतीत से वर्तमान तक के सांस्कृतिक वैभव को सशक्त ढंग

से उकेरा गया है तथा इसमें आंचलिकता की छाप होती है। लोक में ऐसे लक्षण है जिनकी पुनरावृत्ति होती है तथा जिनमें दीर्घकाल तक रहने की आन्तरिक क्षमता होती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विविध लोकगीतों के आधार पर ही विवाह की सम्पूर्ण पृष्ठभूमि तैयार होती है। प्रत्येक गीत में क्षण–क्षण की लोकवाणी मुखरित होती है। ये सरस गीत ही अनुष्ठानिक पूजा को सम्पूर्णता प्रदान करते हैं। इन लोकगीतों के भाव सुनकर प्रतिपल देवी–देवता भी पृथ्वी पर उतर कर विभिन्न अनुष्ठानों को देखते है और शामिल होकर आर्शीवाद देते हैं। लोकगीतों के वर्णनों से प्रतीत होता है कि लोक ने प्रकृति की विशालता, मधुरता, सजीवता को अपने हृदय में समेट लिया है। वर उसके माता–पिता, वधू–उसके माता–पिता के हृदयाभिक्तियों का लोकगीतों में सारग्रही वर्णन किया गया है। विवाह की समस्त रस्मों का मांगल गीतों में बखूबी वर्णन मिलता है इसीलिए कहा गया है 'रीता होन्दन गीत' (रीत के होते हैं गीत)।

सन्दर्भ

1. चन्दोला, डॉ0 सरला – उत्तराखण्ड का लोक साहित्य और जनजीवन तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली (पृष्ठ सं0 139)
2. नौटियाल, भगवती प्रसाद – मध्यहिमालयी भाषा, संस्कृति, साहित्य एवं लोक साहित्य (पृष्ठ सं0 140)
3. पांडे गिरिजा, भाकुनी हीरा सिंह – हिमालयी इतिहास के विविध आयाम, अनामिका पब्लिकेशन, दिल्ली (पृष्ठ सं0 448)
4. 3।. बाबुलकर मोहनलाल – गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन (पृष्ठ सं0 22)
5. चन्दोला, सरला, उपरोक्त (पृष्ठ सं0 122)
6. रतूड़ी, हरिकृष्ण – गढ़वाल का इतिहास, भागीरथी प्रकाशन, टिहरी गढ़वाल (पृष्ठ सं0 96)
7. पाण्डे, बद्रीदत्त – कुमायुँ का इतिहास, श्याम प्रकाशन, अल्मोड़ा (पृष्ठ सं0 694)
8. Thapliyal- U.P. – Uttaranchal Historical and Cultural Perspectiness B.R. Publication (Pg No. 134)
9. चंदोला पूर्वोक्त (पृष्ठ सं0 122)
10. चंदोला पूर्वोक्त (पृष्ठ सं0 122)
11. चंदोला पूर्वोक्त (पृष्ठ सं0 123)
12. डॉ0 गोविन्द चातक, गढ़वाली लोक कथाएं (पृष्ठ सं0 76)
13. 11A. शैलेष गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य (पृष्ठ सं0 140)
14. मैठाणी लोक जीवन एवं लोकधर्मी साहित्य (पृष्ठ सं0 288)
15. निवेदिता – मध्य हिमालय का लोकधर्म (पृष्ठ सं0 130)
16. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 125)
17. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 125)
18. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 125)
19. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 126)
20. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 127)
21. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 127)
22. मैठाणी – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 289)
23. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 128)
24. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 128)
25. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 128)
26. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 129)
27. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 129)

28. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 129)
29. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 129)
30. शैलेश, गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य (पृष्ठ सं0 141)
31. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 130)
32. शैलेश, गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य (पृष्ठ सं0 130)
33. 30A. शैलेश – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 140)
34. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 140)
35. चन्दोला – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 142)
36. 32A- पाण्डेय बद्रीदत्त – उपरोक्त (पृष्ठ सं0 276)
37. निवेदिता – मध्य हिमालय का लोकधर्म (पृष्ठ सं0 131)
38. चन्दोला उपरोक्त (पृष्ठ सं0 132)
39. चन्दोला उपरोक्त (पृष्ठ सं0 132)
40. चन्दोला उपरोक्त (पृष्ठ सं0 133)
41. चन्दोला उपरोक्त (पृष्ठ सं0 133)
42. चन्दोला उपरोक्त (पृष्ठ सं0 133)
43. चन्दोला उपरोक्त (पृष्ठ सं0 133)
44. चन्दोला उपरोक्त (पृष्ठ सं0 134)
45. मैठाणी (पृष्ठ सं0 293)

Copyright © 2017, Dr. Ranjana Rawat. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.